मुम्बई जिनमंदिर विधान

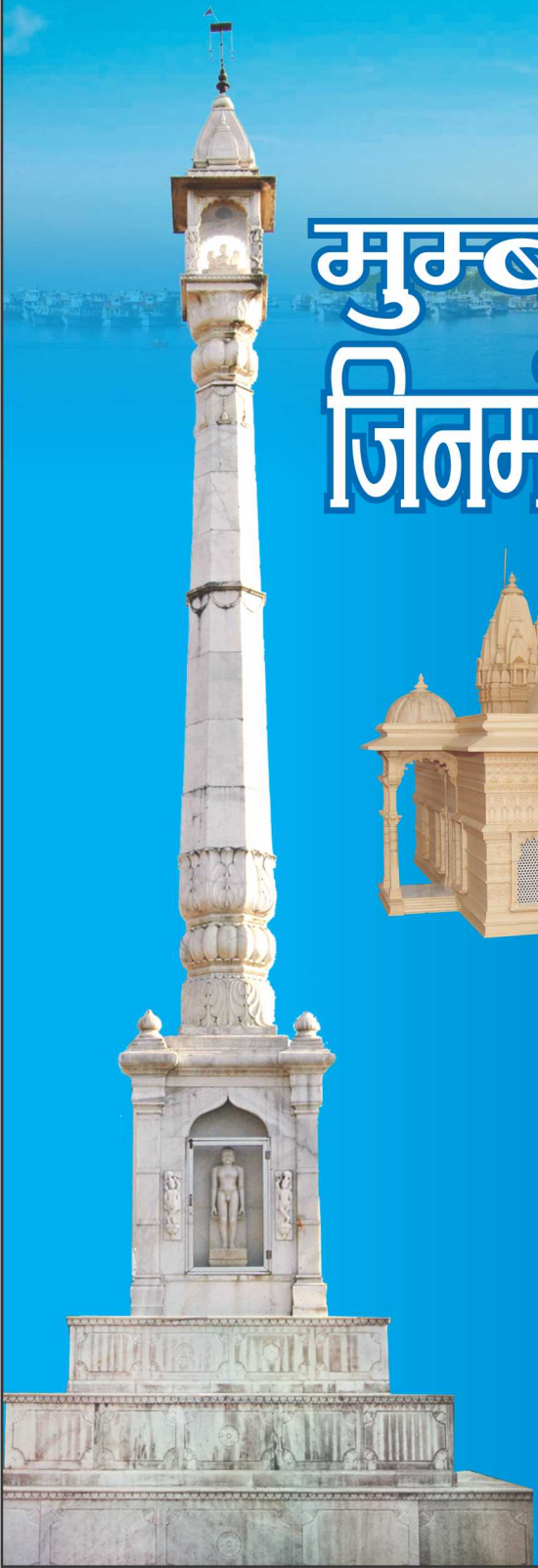

-रचयित्री-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 493

मुम्बई जिनमंदिर विधान

–रचयित्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

सर्वोच्च जैन साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ द्वारा महाराष्ट्र तीर्थ यात्रा हेतु ऋषभदेवपुरम्-मांगीतुंगी से 6 मार्च 2017 को हुए मंगल विहार के मध्य मुम्बई महानगर में धर्मप्रभावना (मई-जून 2017) के प्रसंग में मुम्ब्रा में भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.,

फोन नं.- (01233) 280184, 280994

- Website -

www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com

E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2543	मूल्य
2200 प्रतियाँ	ज्येष्ठ कृ. चतुर्थी, 14 मई 2017	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादकः–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

डॉ. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-डॉ. जीवन प्रकाश जैन

धर्मप्रेमी बंधुओं!

आज हमें इस पुस्तक के प्रकाशन अवसर पर परमपूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के प्रति अनन्य कृतज्ञतापूर्वक उनके चरणों की वंदना का महत्वपूर्ण प्रसंग प्राप्त हुआ है।

बंधुओं, यह साहित्य जगत के इतिहास में ऐसा प्रथम अवसर है, जब किसी महानगर या शहर के जिनमंदिरों एवं उनमें विराजमान विभिन्न जिनप्रतिमाओं की वंदना हेतु किसी विधान की रचना हुई है।

पूज्य माताजी ने अत्यन्त सरल हिन्दी एवं भावपूर्ण पद्यांजलि के साथ रचा यह विधान मुम्बई महानगर के लगभग सभी जिनमंदिरों तथा चैत्यालयों की अर्चना हेतु समर्पित किया है। यह सम्पूर्ण मुम्बई महानगर के श्रद्धालु भक्तों एवं भारत की समस्त दिगम्बर जैन समाज पर पूज्य माताजी का महान उपकार है, जो उन्होंने अनन्त भक्तिरस के साथ ऐसे अद्वितीय विधान की रचना की है।

इस विधान में पूज्य माताजी ने विभिन्न सुरीले छंदों व तर्जों पर 46 जिनमंदिरों तथा 26 चैत्यालयों के अर्घ्य बनाये हैं, जिनको संगीतमयी भक्ति एवं लयबद्ध गायन के साथ आयोजित करके भक्तजन सदैव ही पुण्यार्जन करते रहेंगे।

यदि इसमें किसी जिनमंदिर और चैत्यालय का नाम रह गया है तो भक्तजन हमें सूचित करें ताकि अगले संस्करण में उनके अर्घ्य भी जोड़े जा सकें।

सर्वोच्च जैन साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद से पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित यह विधान सकल जैन समाज मुम्बई के भक्तों एवं सम्पूर्ण महानगर के लिए सदैव मंगलकारी होवे तथा सभी भक्तजन सदा इस विधान की भक्तिगंगा से अपने जीवन को पवित्र करते रहें, यही मंगल कामना है।

-प्रकाशन सौजन्य-

प्रथम बार इस विधान के प्रकाशन सौजन्य का सौभाग्य श्री शांतिलाल विमल कुमार, कमल कुमार, तुषार, तनुज, अनुज, आरित कासलीवाल-सायन (मुम्बई) परिवार को प्राप्त हुआ है अतः इस अवसर पर वे विशेष बधाई के पात्र हैं।

मंगल आशीर्वाद

मुझे परम हर्ष है कि मेरी प्रज्ञावान शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती जी ने प्रथम बार किसी शहर के जिनमंदिरों की वंदना करने हेतु इस विधान की रचना की है। यह विधान मुम्बई महानगर के जिनमंदिरों एवं चैत्यालयों की वंदना हेतु समर्पित किया गया है अतः मुझे विश्वास है कि इस विधान से परोक्षरूप से ही भक्तजन प्रत्येक जिनमंदिर की वंदना अपने-अपने स्थान से बैठकर ही करेंगे और प्रत्येक जिनमंदिर में विराजमान जिनप्रतिमाओं तक सभी भक्तों के भावपूर्ण अर्घ्य भी समर्पित किये जा सकेंगे। इस माध्यम से अतिशय पुण्य की प्राप्ति होकर सभी को भक्ति का एक नया आयाम प्राप्त होगा।

अतः इस विधान की रचना एवं प्रकाशन अवसर पर आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के प्रति मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है तथा मुम्बई महानगर के सकल जैन समाज के साथ ही समस्त जैन भक्तों को इस विधान से आत्मविशुद्धि और पुण्यार्जन का अवसर प्राप्त होता रहे, यही मंगल भावना है।

-गणिनी ज्ञानमती

नवदेवता पूजन (हिन्दी)

गीता छन्द

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।नव.2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।नव.4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।नव.5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।नव.6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।नव.7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।नव.8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।नव.9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।** (9, 27 या 108बार)

जयमाला

-सोरठा-

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हों।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकलजंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनी पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

-दोहा-

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

-गीता छंद-

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।।इत्याशीर्वादः।।

नवदेवता पूजन (मराठी)

तर्ज-देख तेरे संसार की हालत.....

नवदेवांची पूजन करतो मिळते नव निधी महान,
जय जय जय नव देव महान।।टेक.।।
अरिहंत आणि सिद्ध परमेष्ठी।
आचार्य-उपाध्याय परमेष्ठी।।
सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-चैत्य-चैत्यालय महान,
जय जय जय देव देव महान।।1।।
सर्वांना इथे करूँ आह्वानन।
स्थापन आणि सन्निधापन।।
पुष्पांजलि अर्पण करतो मी पूजन करून महान,
जय जय जय नव देव महान-2।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-शेर छंद

गंगे चे नीर मुनि मना समान पवित्र आहे।
भगवन्ताच्या चरणी चढ़ाव्या मन पवित्र आहे।।
भवसिन्धु तरण्या साठी मी पूजा ही रचतो।
नव देवतांची मूर्ति आपल्या हृदयी धारतो।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरीचे केशर घेउनी मी आलो।
भगवन्ताच्या चरणामध्ये चर्चन करण्या आलो।।

भवसिन्धु तरण्या साठी मी पूजा ही रचतो।
नव देवतांची मूर्ति आपल्या हृदयी धारतो।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान अक्षता चे पुंज मी आणले।
भगवन्ताच्या चरणमध्ये अर्पण करतो त्याला।।
भवसिन्धु तरण्या साठी मी पूजा ही रचतो।
नव देवतांची मूर्ति आपल्या हृदयी धारतो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीच्या लड़ी सम मी पुष्पलड़ी आणली।
विषयानधता समाप्तकरण्या साठी मी आलो।।
भवसिन्धु तरण्या साठी मी पूजा ही रचतो।
नव देवतांची मूर्ति आपल्या हृदयी धारतो।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पक्वानांची थाळी मी हाता मध्ये आणली।
प्रभु चरणां मधे त्यासी मी अर्पण केली।।
भवसिन्धु तरण्या साठी मी पूजा ही रचतो।
नव देवतांची मूर्ति आपल्या हृदयी धारतो।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृताचा एक दीपक घेऊन मी आलो।
प्रभु आरती ने माझे मोहतिमिर नाश झाले।।
भवसिन्धु तरण्या साठी मी पूजा ही रचतो।
नव देवतांची मूर्ति आपल्या हृदयी धारतो।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मी चंदनाची धूप सुगंधीत आणतो।
प्रभु सम्मुख अग्निमधे त्यासी अर्पण करतो।।
भवसिन्धु तरण्या साठी मी पूजा ही रचतो।
नव देवतांची मूर्ति आपल्या हृदयी धारतो।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

डाळिंब द्राक्षे फळांची थाळी आणतो।
मी शिवफळांची प्राप्ति हेतु प्रभु पूजा करतो।।
भवसिन्धु तरण्या साठी मी पूजा ही रचतो।
नव देवतांची मूर्ति आपल्या हृदयी धारतो।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मी अष्टद्रव्य मिळून अर्घ्य थाळी आणतो।
प्रभु चरणां मध्ये ''चन्दनामती'' ते अर्पण करतो।।
भवसिन्धु तरण्या साठी मी पूजा ही रचतो।
नव देवतांची मूर्ति आपल्या हृदयी धारतो।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज-गंगा यमुना में जब तक.....

झारी नाची घेऊन चरणां मधे, तीन धारा करण्याचे भाव आहे....भाव आहे।
देवा.....हो नव देवा.....। देवा.....हो नव देवा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

फार सुरभित सुगंधीत पुष्प घेऊनी, प्रभु चरणां मधे पुष्पांजलि मी करतो.....
पुष्पांजलि मी करतो।
देवा.....हो नव देवा.....। देवा.....हो नव देवा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

(9, 27 या 108 बार मंत्र को जपते हुए पुष्पांजलि करें)

जयमाला

तर्ज-देख तेरे संसार की हालत.....

नव देवांची पूजन करून मी म्हणतो जयमाला,
आज आनंदि आनंद झाला-2।।टेक.।।

अरिहंत देव प्रथम देवता आहे।
त्यांचे प्रसिद्ध शेह चाळीस गुण आहे।।
सिद्धशिलांचे वासी सिद्ध प्रभूंची गुणमाला,
आज आनंदि आनंद झाला-2।।1।।

आचार्य-उपाध्याय परमेष्ठी।
यांचे मूलगुण छत्तिस-पंचवीस।।
पंचपरमेष्ठी सर्व साधूंची म्हणतो गुणमाला,
आज आनंदि आनंद झाला-2।।2।।

जिनधर्माची शरण घेऊनी।
जिनवाणी चा स्वाध्याय करतो मी।।
श्री अकृत्रिम-कृत्रिम जिनचैत्यांची गुणमाला,
आज आनंदि आनंद झाला-2।।3।।

जिनचैत्यालय मध्ये जातो।
सम्यग्दर्शन प्राप्ती होते।।
सर्व नव देवांच्या पूजनाची ही गुणमाला,
आज आनंदि आनंद झाला-2।।4।।

सद्या उपस्थित त्रय परमेष्ठी।
सूरी-पाठक-साधु परमेष्ठी।।
त्यांचा जयकारा करतो मिळती गुणाची माला,
आज आनंदि आनंद झाला-2।।5।।

गौतम गणधर चैत्य भक्ति मध्ये।
नव देवांची भक्ती करतो।।
महावीरांचा समवसरण मध्ये म्हणतो गुणमाला,
आज आनंदि आनंद झाला-2।।6।।

तसेच गणिनी ज्ञानमती जी।
नव देवांची भक्ती करती।।
नव देवांची हिन्दी पूजा रचिता गुणमाला,
आज आनंदि आनंद झाला-2।।7।।

मी पूर्णार्घ समर्पण करतो।
पद अनर्घची भावना करतो।।
भवसिन्धू तरण्या साठी मी गातो जयमाला,
आज आनंदि आनंद झाला-2।।8।।

जिनभक्ती ही मुक्ति प्रदात्री।
पंचम कालाची सुखदात्री।।
एवढेच ''चन्दनामती'' आर्यिका म्हणते जयमाला,
आज आनंदि आनंद झाला-2।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

तर्ज-गंगा यमुना में जब तक.....

नव देवांची पूजा करूनी मला,
नव नवी भावना भावितो निज मना.....भावितो निजमना।
देवा.....हो नव देवा.....2।।टेक.।।

माझे मन सदा प्रभुच्या चरणीं आहे,
अशी इच्छा मी करितो निज मना....करितो निजमना।
देवा.....हो नव देवा.....2।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

मुम्बई जिनमंदिर विधान

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

(स्थापना)

तर्ज - मेरे देश की धरती...

मंदिर का दर्शन करो भव्य जन, पुण्य भण्डार भरेगा।
मंदिर का दर्शन...।।टेक0।।

ये जिनमंदिर जिन संस्कृति का, दिग्दर्शन हमें कराते हैं।
ये जिनमंदिर जिन प्रतिमाओं का, दर्शन हमें कराते हैं।। हो...हो...
इनका दर्शन-वंदन सबके....
इनका दर्शन-वंदन सबके, भव-भव का त्रास हरेगा।।मंदिर का दर्शन....।।1।।

महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई, भौतिक नगरी कहलाती है।
लेकिन अनेक जिनमंदिर से, आध्यात्मिक भी कहलाती है।।हो...हो..
उनके दर्शन यदि कर लोगे ...
उनके दर्शन यदि कर लोगे, आतम सुख सार मिलेगा।।मंदिर का दर्शन....।।2।।

इन सभी मंदिरों के प्रभुवर की, पूजन हमें यहाँ रचाना है।
इक साथ सभी का आह्वानन, कर मन से सबको ध्याना है।।हो...हो...
स्थापन सन्निधिकरण करो .....
स्थापन सन्निधिकरण करो, हर मन का कमल खिलेगा।।मंदिर का दर्शन....।।3।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अथ अष्टक-

तर्ज - अच्छा सिला दिया ...

मुम्बई के सभी जिनमंदिर को नमन।
मंदिरों की सभी प्रतिमाओं को नमन।।टेक0।।

समुद्र का खारा जल, मीठा भी हो जाता है।
यदि वह जिनवर के, चरणों में चढ़ जाता है।।
प्रभु को मनाऊँ मैं, चढ़ाके गंगा जल।
मंदिरों की सभी प्रतिमाओं को नमन।।मुम्बई के सभी..।।1।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यो जन्म-ज़रा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन यदि प्रभु के चरणों में चढ़ जाता है।
तभी अपना नाम वह, सार्थक कर पाता है।।
प्रभु को मनाऊँ मैं, चढ़ा चरण में चंदन।
मंदिरों की सभी प्रतिमाओं को नमन।।मुम्बई के सभी..।।2।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चावल यदि अक्षत बनके, पूजन में चढ़ जाते हैं।
तभी वे घर की अक्षय सम्पत्ति बढ़ाते हैं।।
प्रभु को मनाऊँ मैं, चढ़ा के अक्षत पुंज।
मंदिरों की सभी प्रतिमाओं को नमन।।मुम्बई के सभी..।।3।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्छे-अच्छे पुष्प, प्रभु चरणों में चढ़ जाते हैं।
फिर तो मानव जीवन में, फूल महक जाते हैं।।
प्रभु को मनाऊँ मैं मन से, पद में रख सुमन।
मंदिरों की सभी प्रतिमाओं को नमन।।मुम्बई के सभी..।।4।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खाने के पक्वान यदि पूजन में चढ़ाते हैं।
तन की क्षुधा नाशने में कारण वे बन जाते हैं।।
प्रभु को मनाऊँ मैं, कर नैवेद्य से पूजन।
मंदिरों की सभी प्रतिमाओं को नमन।।मुम्बई के सभी..।।5।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक से आरती करने, प्रभु पद में आना है।
उसकी दिव्य ज्योति, अपने जीवन में भी लाना है।।
प्रभु को मनाऊँ मैं, करके दीपक से पूजन।
मंदिरों की सभी प्रतिमाओं को नमन।।मुम्बई के सभी..।।6।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

महलों में धूप को जलाने से क्या लाभ है।
प्रभु ढिग जलाओ तो होंगे कर्म नाश हैं।।
प्रभु को मनाऊँ मैं, करके धूप से पूजन।
मंदिरों की सभी प्रतिमाओं को नमन।।मुम्बई के सभी..।।7।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर-सेव-आम फल के भरे थाल हैं।
प्रभु पद चढ़ा कर अब होना मालामाल है।।
प्रभु को मनाऊँ मैं, करके फलों से पूजन।
मंदिरों की सभी प्रतिमाओं को नमन।।मुम्बई के सभी..।।8।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य ' चन्दनामती ' ले स्वर्णथाल में।
अर्घ्य समर्पण करूँ झुकाऊँ पद में भाल मैं।।

प्रभु को मनाऊँ मैं, करके अर्घ्य समर्पण।
मंदिरों की सभी प्रतिमाओं को नमन।।मुम्बई के सभी..।।9।।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बई महानगरस्य समस्तजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज-फूलों से तारों से मेरा कहना है.....

कंचन की झारी से धारा करना है।
नाथ! तुम्हारी ही भक्ति करना है।।
गंगा सा निर्मल अपने मन को करना है।।कंचन की...।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पों की अंजलि से पूजा करना है।
नाथ! तुम्हारी ही भक्ति करना है।।
सारी उमर प्रभु की भक्ति करना है।।पुष्पों की...।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अर्घावली

(1)

तर्ज - जहाँ डाल-डाल पर सोने की ....

मुम्बई में बोरिवलि के निकट पोदनपुर तीर्थ है प्यारा,
त्रय मूर्ति को नमन हमारा।।टेक0।।
आचार्य शान्तिसागर गुरुवर के, शिष्य नेमिसागर थे।
उनने पोदनपुर तीर्थ बनाया, गुरुवर की स्मृति में..हाँ गुरुवर की स्मृति में।।
प्रभु ऋषभ-भरत-बाहूबलि के जिनबिम्ब का दृश्य निराला,
त्रय मूर्ति को नमन हमारा।।1।।
हम अर्घ्य समर्पण करते हैं, जिनवर त्रिमूर्ति चरणों में।
वहाँ और विराजित सब जिनबिम्ब व, गुरुद्वय के चरणों में...
हाँ गुरुद्वय के चरणों में।।

'चन्दनामती' इस तीर्थ से गूँजे आर्षमार्ग का नारा,
त्रय मूर्ति को नमन हमारा।।2।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरस्थित पोदनपुर तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2)

-शेर छन्द-

मुम्बई के कालबा देवी रोड पर बना मंदिर।
संघपति श्री पूनमचन्द घासीलाल का निर्मित।।
यह पार्श्वनाथ मंदिर कहलाता है सुन्दर।
इस मंदिर व जिनबिम्बों को अर्घ्य समर्पण।।2।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे कालाबादेवीरोडस्थित पार्श्वनाथजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3)

मंदिर गुलालवाड़ी को है मेरा नमन।
श्री पार्श्वनाथ के चरण में अर्घ्य समर्पण।।
यहाँ साधुसंघों का सदा होता है पदार्पण।
भक्तों की जय जयकार से है गूँजता गगन।।3।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे गुलालवाड़ीस्थित श्रीपार्श्वनाथजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4)

-शंभु छन्द-

मुम्बई भुलेश्वर रोड पे श्री चन्द्रप्रभ जिनमंदिर प्यारा।
जहाँ जाकर भव्य भूल जाता अपने जीवन का दुख सारा।।
उस मंदिर की सब जिनप्रतिमा को मेरा अर्घ्य समर्पण है।
सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हेतु मन-वचन-काय से वंदन है।।4।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे भुलेश्वरस्थित श्रीचन्द्रप्रभजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(5)

लेमिंगटन रोड पर बोर्डिंग में श्री नेमिनाथ का मंदिर है।
छात्रों एवं भक्तों के लिए प्रभु भक्ति का माध्यम सुन्दर है।।
मैं भी उस मंदिर का भावों से दर्शन-वंदन करता हूँ।
ले अष्ट द्रव्य का थाल प्रभू को अर्घ्य समर्पण करता हूँ।।5।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे लेमिंगटन रोड बोर्डिंगस्थित श्रीनेमिनाथजिन-मंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6)

मुम्बई कमाठीपुरा में श्री महावीर दिगम्बर मंदिर है।
महावीर प्रभु के संग जहाँ, प्रतिमाएँ और भी सुन्दर हैं।।
शासननायक उन वीर-महति महावीर के पद में वन्दन है।
सब प्रतिमा के संग मूलनायक जिनवर को अर्घ्य समर्पण है।।6।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे कमाठीपुरास्थितश्री महावीरजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7)

-दोहा-

खार मुम्बई में बना, पार्श्वनाथ जिनधाम।
जिनमंदिर जिनबिम्ब को, अर्घ्य दे करूँ प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे खारकालोनीस्थितश्रीपार्श्वनाथजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8)

तर्ज-जरा सामने तो आओ.....

चलो मंदिर चलें विले पारले, जहाँ पार्श्वनाथ भगवान हैं।
भक्तों की भक्ति के हेतु ही, जिनमंदिर जहाँ पर महान है।।टेक0।।

पार्श्वनाथ जिनमंदिर नाम से, जिसकी वहाँ प्रसिद्धि है।
पद्मावति-धरणेन्द्र से सेवित, प्रभु की करें सब भक्ति हैं।।

अर्घ्य अर्पण करूँ जिननाथ को, जिससे मिल जावे पुण्य महान है।
भक्तों की भक्ति के हेतु ही, जिनमंदिर की महिमा महान है।।1।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे विलेपारलेस्थित श्रीपार्श्वनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9)

चलो मंदिर चलें गोरेगाँव के,जहाँ पार्श्वनाथ भगवान हैं।
भक्तों की भक्ति के हेतु ही, जिनमंदिर जहाँ पर महान है।।टेक0।।

गोरेगाँव मुम्बई में श्री प्रभु पार्श्वनाथ का मंदिर है।
जिनके दर्शन करके मन में भाव बनाना सुन्दर है।।
अर्घ्य अर्पण करूँ जिननाथ को, जिससे मिल जावे पुण्य महान है।
भक्तों की भक्ति के हेतु ही, जिनमंदिर जहाँ पर महान है।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे गोरेगाँवस्थित श्रीपार्श्वनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(10)

-शेर छन्द-

मुम्बई में है मलाड पूर्व में बना मंदिर।
श्री आदिनाथ मंदिर में मूर्तियाँ सुन्दर।।
मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ यहाँ मंदिर व मूर्ति को।
पा जाऊँ पद अनर्घ्य व निज आत्मकीर्ति को।।10।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे पूर्वमलाडस्थित श्रीआदिनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(11)

मुम्बई मलाड पश्चिम जिनभक्ति का साधन।
श्री ऋषभदेव मंदिर में होता आराधन।।
मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ यहाँ मंदिर व मूर्ति को।
पा जाऊँ पद अनर्घ्य व निज आत्मकीर्ति को।।11।।

ॐ ह्रीं मुम्बईमहानगरे पश्चिममलाडस्थित श्रीऋषभदेवजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(12)

मुम्बई महानगर के कांदिवली क्षेत्र में।
श्री महावीर प्रभु का जिनालय बना उसमें।।
मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ यहाँ मंदिर व मूर्ति को।
पा जाऊँ पद अनर्घ्य व निज आत्मकीर्ति को।।12।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे पश्चिमकांदिवलीस्थित श्रीमहावीरजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(13)

श्रीआदिनाथ बाहुबली का बना मंदिर।
श्रीमंडपेश्वर रोड बोरिवली में सुन्दर।।
प्रतिमाओं को वन्दन करूँ मंदिर को भी नमन।
ले अष्टद्रव्य थाल करूँ अर्घ्य समर्पण।।13।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे बोरिवलीपश्चिममंडपेश्वररोडस्थित श्रीआदिनाथबाहुबलीजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(14)

-दोहा-

श्रीचन्द्रप्रभ नन्दीश्वर, द्वीप जिनालय नाम।
बोरीवली पश्चिम बना, अर्घ चढ़ाऊँ आन।।14।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे बोरिवलीपश्चिमएसवीपीरोडस्थित श्रीचन्द्रप्रभनंदीश्वरद्वीपजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(15)

श्रीबोरीवली पूर्व में, नेमिनाथ जिनधाम।
उस मंदिर अरु मूर्ति को, अर्घ्य समर्पूं आन।।15।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे बोरिवलीपूर्वस्थित श्रीनेमिनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(16)

मुम्बई दहिसर पूर्व में, आदिनाथ जिनसद्म।
अर्घ्य चढ़ा वन्दन करूँ, श्री जिनवर पदपद्म।।16।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे दहिसरस्थित श्रीआदिनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(17)

मुम्बई मीरा रोड पर, थाणे में जिनधाम।
शान्तिनाथ को अर्घ्य है, अर्पण नमन त्रिकाल।।17।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे मीरारोडथाणेस्थित श्रीशान्तिनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(18)

-शंभु छन्द-

महावीर दिगम्बर जिनमंदिर, भायन्दर पूर्व में निर्मित है।
वह जेसल पार्क के निकट, वीतरागी छवि के संग स्थित है।।
नव देवों में मंदिर भी है, इक देव उसे मैं नमन करूँ।
मंदिर-मूर्ति को अर्घ्य चढ़ा, आतम सुख का भण्डार भरूँ।।18।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे भायन्दरपूर्वस्थित श्रीमहावीरजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(19)

भायन्दर पश्चिम मुम्बई में, श्री आदिनाथ जिनमंदिर है।
भौतिकता में आध्यात्मिकता का, पाठ पढ़ाता सुन्दर है।।
नव देवों में मंदिर भी है, इक देव उसे मैं नमन करूँ।
मंदिर-मूर्ति को अर्घ्य चढ़ा, आतम सुख का भण्डार भरूँ।।19।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे भायन्दरपश्चिमस्थित श्रीआदिनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(20)

-शंभु छंद-

चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर है, वसई पूर्व जिला थाणे।
भक्तों की टोली आती हैं, वहाँ चिन्तित वस्तू को पाने।।
मुम्बई निकट इस जिनमंदिर को, सादर शीश झुकाता हूँ।
मैं अर्घ्य समर्पित करके प्रभु, बस गीत आपके गाता हूँ।।20।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे वसईपूर्वस्थित श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(21)

वसई पश्चिम में और एक, श्री पार्श्वनाथ का मंदिर है।
वहाँ रहने वाले सभी जैन, श्रावकों का वह अवलम्बन है।।
मुम्बई निकट इस जिनमंदिर को, सादर शीश झुकाता हूँ।
मैं अर्घ्य समर्पित करके प्रभु, बस गीत आपके गाता हूँ।।21।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे वसईपश्चिमस्थित श्रीपार्श्वनाथजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(22)

वसई पश्चिम के समतानगर में महावीर जिनमंदिर है।
शासननायक प्रभुवर का गुण गाने हेतू अवलम्बन है।।
मुम्बई निकट इस जिनमंदिर को, सादर शीश झुकाता हूँ।
मैं अर्घ्य समर्पित करके प्रभु, बस गीत आपके गाता हूँ।।22।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे वसईपश्चिमस्थित श्रीमहावीरजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(23)

तर्ज - चलो तीरथ यात्रा चलो....

चलो मंदिर दर्शन कर लें-2,
दर्शन-पूजन-वंदन करके सुख-सम्पति भर लें।।चलो मंदिर दर्शन...।।टेक0।।

मुम्बई निकट जिला थाणे में, नालासोपारा।
शान्तिनाथ जिनमंदिर है, लगता प्यारा-प्यारा।।
अर्घ्य प्रभु को अर्पण कर लें,
शान्तिनाथ के संग सब जिनवर को वंदन कर लें।।चलो मंदिर दर्शन....।।23।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे नालासोपारास्थित श्रीशान्तिनाथजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(24)

चलो मंदिर दर्शन कर लें-2,
दर्शन-पूजन-वंदन करके सुख-सम्पति भर लें।।चलो....।।टेक0।।

थाणे के विरार पश्चिम में, जिनमंदिर शोभे।
वहीं शिवाजी चौक के मंदिर में प्रभुवर शोभें।।
अर्घ्य प्रभु को अर्पण कर लें,
महावीर के संग सब जिनवर को वंदन कर लें।।चलो मंदिर दर्शन....।।24।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे शिवाजीचौकविरारपश्चिमस्थित श्रीमहावीरजिन-मंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(25)

-दोहा-

इसी विरार में और है, पार्श्वनाथ जिनधाम।
अर्घ्य चढ़ा सब मूर्ति को, नमन करूँ निष्काम।।25।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे विरारपश्चिमस्थित श्रीपार्श्वनाथजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(26)

कुर्ला मुम्बई में बना, महावीर जिनधाम।
अर्घ्य समर्पण कर सभी, प्रभु को करूँ प्रणाम।।26।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे कुर्ला स्थितश्रीमहावीरजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(27)

-शंभु छंद-

श्री सर्वोदय ऋषभदेव जिनमंदिर बना सुहाना है।
मुम्बई घाटकोपर में इसका अपना ही नजराना है।।
यहाँ कई धर्मों की संस्कृति लोग देखने आते हैं।
आवो हम सब मिल वृषभेश्वर के पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।।27।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे घाटकोपरस्थित श्रीसर्वोदयऋषभदेवजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(28)

वीर सावरकर चौक घाटकोपर में वीर जिनालय है।
इसमें प्रभु महावीर मूलनायक वेदी में विराजे हैं।।
इस जिनमंदिर को एवं जिन प्रतिमाओं को नमन मेरा।
अर्घ्य चढ़ा करके मैं चाहूँ, जीवन करो चमन मेरा।।28।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे घाटकोपरसावरकरचौकस्थित महावीरजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(29)

भाण्डुप पश्चिम में पार्श्वनाथ का, श्रीजिनमंदिर स्थित है।
सन्मानसिंग रोड पर प्रभु भक्ती में भक्त समर्पित हैं।।
उस मंदिर के श्रीपार्श्वनाथ, प्रभुवर को अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मंदिर की सब प्रतिमाओं को, हम झुक-झुक शीश नमाते हैं।।29।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे भाण्डुपपश्चिमस्थित श्रीपार्श्वनाथजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(30)

-शेर छन्द-

मुम्बई मुलुण्ड पूर्व में हरिओम नगर है।
श्रीशान्तिनाथ मंदिर से भू पवित्र है।।

उनके चरण में अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ।
प्रभु भक्ति के बल पर ही भव समुद्र को तिरूँ।।30।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे मुलुण्डपूर्वस्थित-श्रीशान्तिनाथजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(31)

मुम्बई मुलुण्ड पश्चिम में वीर जिनालय।
भव्यों को भक्ति करने के लिए है महालय।।
महावीर के मंदिर में महावीर को नमन।
कर अर्घ्य समर्पण सभी प्रतिमाओं को वंदन।।31।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे मुलुण्डपश्चिमस्थित श्रीमहावीरजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(32)

-चौपाई-

जिनमंदिर जिनप्रतिमा वन्दूँ, अपने भव-भव के दुख खण्डूँ।
अर्घ्य समर्पण करूँ प्रार्थना, बार-बार न हो भव में आवना।।टेक.।।
मुम्बई का उपनगर भिवण्डी, थाणे में निर्मित जिनमंदिर।
जिनवर सम्मुख है ये भावना, प्राणि मात्र से हो प्रेम भावना।।32।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे भिवंडीस्थित श्रीशांतिनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(33)

तर्ज - चलो भक्तों चलो भक्तों....

बाहुबली बाहुबली, मुम्ब्रा के प्रभु बाहुबली।
मुम्बई में मुम्ब्रा की पहाड़ी पर हैं खड़े प्रभु बाहुबली।।टेक0।।

जल-फल आदि अर्घ्य सजाकर प्रभु के चरण चढ़ाना है।
युग के प्रथम जो कामदेव उन बाहुबली को मनाना है।।
वहीं चलो चलते हैं भाव से, जहाँ खड़े प्रभु बाहुबली।।बाहुबली....।।33।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे मुम्ब्रास्थितश्रीबाहुबलीस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(34)

-चौपाई -

डोम्बीवली मुम्बई पूर्व में, महावीर जिनमंदिर उसमें।
अर्घ्य समर्पण करूँ प्रार्थना,बार-बार न हो भव में आवना।।
वीर सावरकर चौक बना है, वहीं प्रभु भक्ति का सौख्य घना है।
जिनवर सम्मुख है ये भावना, प्राणिमात्र से हो प्रेम भावना।।
वीर महावीर बोलो जय जय महावीर...।।34।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे डोम्बीवलीपूर्वस्थित श्रीमहावीरजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(35)

-चौपाई-

डोम्बीवली मुम्बई पश्चिम में, आदिनाथ जिनमंदिर उसमें।
अर्घ्य समर्पित है जिनवर को, पा जाऊँ प्रभु पद अनर्घ्य को।।
जिनभक्ति भवदधि से तिराती, मनवांछित फल पूर्ण कराती।
प्रभु सम्मुख मैं यह बस चाहूँ, जनम-जनम तेरा दर्शन पाऊँ।।
वीर महावीर बोलो जय जय महावीर...।।35।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे डोम्बीवलीपश्चिमस्थित श्रीआदिनाथजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(36)

-शेर छन्द-

श्री चन्द्रप्रभु जिनालय कल्याण पश्चिम में।
मुम्बई के भक्त जाकर दर्शन करें उसमें।।
जिनमूर्तियों को अर्घ्य चढ़ाकर नमन करें।
क्रम-क्रम से मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रार्थना करें।।36।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे कल्याणपश्चिमस्थित श्रीचन्द्रप्रभजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(37)

श्री अजितनाथ मंदिर एरोली के अंदर।
संदेश त्याग का सभी को दे रहा सुंदर।।
जिनमूर्तियों को अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ।
क्रम-क्रम से मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रार्थना करूँ।।37।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे एरोलीस्थित श्रीअजितनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(38)

-दोहा-

वाशी मुम्बई में बना, जिनमंदिर जिनधाम।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं नमूँ , हो जाऊँ निष्काम।।38।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे नवीमुम्बईवाशीस्थित श्रीमहावीरजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(39)

नवी मुम्बई का खारघर, चन्द्रप्रभ जिनधाम।
अर्घ्य चढ़ा जिनमूर्ति अरु, मंदिर को करूँ प्रणाम।।39।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे नवीमुम्बईखारघरस्थित श्रीचन्द्रप्रभजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(40)

-शंभु छंद-

न्यू पनवेल ईस्ट में श्री मुनिसुव्रत जिन का मंदिर है।
मुम्बई नगर में जिनभक्ति का बहता सदा समन्दर है।।
जल से फल तक वसु द्रव्यों का यह अर्घ्य थाल अर्पण कर लूँ।
जिनवर चरणों की भक्ति कर आध्यात्मिक सुख मन में भर लूँ।।40।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे न्यू पनवेल ईस्ट स्थित श्रीमुनिसुव्रतजिन-मंदिरजिनप्रतिमाभ्य अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(41)

मुम्बई नगर लोखण्ड वाला में, पारसनाथ जिनालय है।
प्रभु पार्श्वनाथ के साथ वहाँ जिनवर का बड़ा शिवालय है।।
आठों द्रव्यों का अर्घ्य स्वर्ण थाली में भरकर लाया हूँ।
निज पद अनर्घ्य पाने हेतु मैं अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।41।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे लोखण्डवालास्थित श्रीपार्श्वनाथजिन-मंदिरजिनप्रतिमाभ्य अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(42)

-दोहा-

श्रीसंभव भगवान का, जिनमंदिर जिनधाम।
पश्चिम माटूंगा चलो, अर्घ्य दे करो प्रणाम।।42।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे माटूंगापश्चिमस्थित श्रीसंभवनाथजिन-मंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(43)

साकी नाका में बना, महावीर जिनधाम।
अर्घ्य चढ़ा जिनबिम्ब को, हो जाऊँ निष्काम।।43।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे साकीनाकास्थित श्रीमहावीरजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(44)

-सोरठा-

कुंथुनाथ जिनधाम, बना असल्फा क्षेत्र में।
अर्घ्य चढ़ाय प्रणाम, करूँ भक्ति मैं हृदय से।।44।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे असल्फास्थित श्रीकुंथुनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(45)

-शेर छंद-

श्री विमलनाथ मंदिर है मुम्बई में बना।
उस क्षेत्र घोड़पदेव में प्रभु भक्ति का झरना।।

मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ जिनालय व मूर्ति को।
पा जाऊँ पद अनर्घ्य तथा आत्मकीर्ति को।।46।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे घोड़पदेवस्थित श्रीविमलनाथजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(46)

योगीनगर बोरीवली पश्चिम में शोभता।
श्री आदिनाथ जिनवर मंदिर है शोभता।।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर जिनेन्द्र को नमन करूँ।
नवदेव में इक देव जिनालय नमन करूँ।।46।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरे योगीनगरबोरीवलीपश्चिमस्थित श्रीआदिनाथजिन-मंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शेरछंद)

मुम्बई महाराष्ट्र की राजधानी, के सब जिनमंदिर को वंदन।
पूर्णार्घ्य चढ़ाकर बने मेरा जीवन भी पुण्यात्मा कुंदन।।
ये जिनमंदिर जिनसंस्कृति की निधियाँ हैं और धरोहर हैं।
'चन्दनामती' इनसे भर जावे मेरा ज्ञान सरोवर है।।1।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरस्य समस्त जिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-चैत्यालयों के लिए समुच्चय अर्घ्य-

तर्ज - आवो बच्चों तुम्हें.....

मुम्बई महानगर के सब, जिनचैत्यालय जिनधाम की।
करूँ वंदना उनमें स्थित, सब जिनवर भगवान की।।
वंदे जिनवरम् -4....।।टेक0।।

चौपाटी पर शान्तिनाथ प्रभु काँच का चैत्यालय मंदिर।
वहीं सुभाष रोड पर चन्द्रप्रभ का चैत्यालय सुन्दर।।

विलेपार्ले पूर्व में पारसनाथजिनेश्वर धाम की।
करूँ वंदना उनमें स्थित सब जिनवर भगवान की।।
वंदे जिनवरम् -4....।।1।।

अंधेरी पश्चिम में आदीनाथ व शांतीनाथ प्रभो।
दोनों जिनचैत्यालय में भक्ति के स्वर गूँजते अहो।।
पूर्व भायंदर में स्थित श्री महावीर भगवान की।
करूँ वंदना उनमें स्थित सब जिनवर भगवान की।।
वंदे जिनवरम् -4....।।2।।

पुनः अंधेरी पूरब में भी पार्श्वनाथ चैत्यालय है।
जोगेश्वरी पूर्व मुम्बई में आदिनाथ चैत्यालय है।।
फिर मलाड में धर्म-शान्ति अरु वीर चैत्यालयधाम की।
करूँ वंदना उनमें स्थित सब जिनवर भगवान की।।
वंदे जिनवरम् -4....।।3।।

कांदीवलि में आदिनाथ चैत्यालय को वंदन कर लो।
बोरिवली में पार्श्व-शान्ति-नेमिप्रभु त्रय चैत्यालय को।।
भायन्दर में पार्श्व-सुपारस चैत्यालय शुभ धाम की।
करूँ वंदना उनमें स्थित सब जिनवर भगवान की।।
वंदे जिनवरम् -4....।।4।।

डोम्बीवलि में चिन्तामणि श्री पार्श्वनाथ गृहचैत्यालय।
माटुंगा-कुर्ला में श्री महावीर के दो गृह चैत्यालय।।
कुर्ला में इक और पार्श्वप्रभु चैत्यालय जिनधाम की।
करूँ वंदना उनमें स्थित सब जिनवर भगवान की।।
वंदे जिनवरम् -4...।।5।।

दादर और विक्रोली पूर्व में पद्मप्रभ गृह चैत्यालय।
भांडुप पश्चिम में प्रभुवर श्री पार्श्वनाथ गृहचैत्यालय।।

थाणे पूर्व व पश्चिम में चैत्यालय पारस धाम की।
करूँ वंदना उनमें स्थित सब जिनवर भगवान की।।
वंदे जिनवरम् -4...।।6।।

मुम्बई महानगर के सब, जिनचैत्यालय जिनधाम की।
करूँ वंदना उनमें स्थित सब जिनवर भगवान की।।
वंदे जिनवरम् -4....।।

ॐ ह्रीं मुम्बई महानगरस्य समस्त जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमाभ्यः महापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

तर्ज - परदेशी परदेशी ....

मंदिर की, मूर्ति की, पूजन करो-2, भक्ति भाव से इनकी पूजन करो-2
पूजन करो मिलके, मन-वचन व तन से,
मन-वचन व तन से सब मिल पूजन कर लो।।मंदिर की...।।टेक0।।

महाराष्ट्र की राजधानी, मुम्बई नगरी..मुम्बई नगरी।
भारत की आर्थिक नगरी, मुम्बई नगरी।।
धर्म भी यहाँ है, कर्म भी यहाँ है, जिन मंदिरों में गूँजे जय जय यहाँ है।।
मंदिर की, मूर्ति की...।।1।।

तीनमूर्ति पोदनपुर तीर्थ है, मुम्बई में ...मुम्बई में।
ऋषभदेव - भरतेश - बाहुबलि जहाँ खड़े।।
बोरिवली मंदिर, है शहर के अन्दर, वहाँ पर विराजित सभी मूर्तियों को नमन।।
मंदिर की, मूर्ति की...।।2।।

सेठ संघपति का मंदिर इक सुन्दर है....सुन्दर है।
देव-शास्त्र-गुरु भक्ति का वह नंदनवन है।।

वहाँ पर विराजें, जिनप्रतिमा राजें, उन सभी प्रतिमाओं को करूँ मैं वंदन।।
मंदिर की, मूर्ति की...।।3।।

है गुलालवाड़ी इक प्रमुख स्थान जहाँ...स्थान जहाँ।
साधु संघ करते हैं प्रमुख प्रवास जहाँ।।
धर्म प्रभावना का, आत्म भावना का, केन्द्र वहाँ के जिनालय को करूँ मैं नमन।।
मंदिर की, मूर्ति की...।।4।।

दादर-गोरेगाँव-अंधेरी के मंदिर...जिनमंदिर।
घाटकोपर-मुम्ब्रा आदि के जिनमंदिर।।
श्री जिनेन्द्र प्रतिमा, चौबीसी की है महिमा, सभी को परोक्ष में भी करते हैं नमन।।
मंदिर की, मूर्ति की...।।5।।

आर्षमार्ग का गढ़ भी मुम्बई कहलाता...कहलाता।
सन्तों की वाणी का सागर लहराता।।
चारित्रचक्री, शान्तिसिन्धु जी की, जयकार गूँजी नेमिसागर गुरुवर से।।
मंदिर की, मूर्ति की ...।।6।।

चौपाटी का है समुद्र क्रीड़ास्थल....क्रीड़ास्थल।
जहाँ पर्यटक नाव बैठ लेते आनन्द।।
बम्बई की झाँकी, सबको है लुभाती, किन्तु उसके संग में धार्मिक यात्रा भी कराती।।
मंदिर की, मूर्ति की..।।7।।
मुम्बई के सब जिनमंदिर को वन्दन है....वंदन है।
करे ' चन्दनामती ' सभी को प्रणमन है।।
भक्त भक्ति करके, आत्म शक्ति भरते, जिनमंदिरों से पुण्य भण्डार भरते।।
मंदिर की, मूर्ति की....।।8।।

संघपति परिवार से भी दो दीक्षा हुई...दीक्षा हुई।
मोतीलाल व गेंदनमल जौहरि जी की।।
मुक्ति के मारग की, रत्नत्रय धारक की, सच्चे तीर्थ मान करके वंदना करूँ मैं।।
मंदिर की, मूर्ति की..।।9।।

-दोहा-

जिनमंदिर जिनमूर्ति को, नमन करूँ शत बार।
भरे ' चन्दनामति 'तभी, पुण्य रत्न भण्डार।।1।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्र राजधानी मुम्बईमहानगरस्य समस्तजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

तर्ज - ये पर्दा हटा दो....

ये जिनमंदिर -जिनप्रतिमा, सम्यग्दर्शन की महिमा,
ये मेरे भारत देश की निधियाँ और धरोहर हैं - 2।
हम इनकी पूजा रचाएँ, ' चन्दनामती ' सुख पाएँ,
ये मेरे भारत देश की निधियाँ और धरोहर हैं 2।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

प्रशस्ति

-दोहा-

ऋषभदेव से वीर तक चौबीसों भगवान।
नमन करूँ इन पद कमल, होवे भव की हान।।1।।

शांतिसिन्धु आचार्य की, पट्टावली महान।
उनके शिष्य प्रथम हुए, वीरसिन्धु मुनिनाथ।।2।।

प्रथमहि पट्टाचार्य थे, वीरसागराचार्य।
उनकी शिष्या ज्ञानमती, गणिनीप्रमुख हैं आज।।3।।

शान्तिसागराचार्य के, दर्शन किए त्रय बार।
अन्त समाधिकाल में भी, कुंथलगिरि किया प्रवास।।4।।

उन गुरु से की विनय, आर्यिका दीक्षा दो गुरुराज।
तिर जाऊँ संसार से, स्त्रीलिंग छेदूँ नाथ।।5।।

गुरुवर ने वात्सल्यमय, दे दिया आशीर्वाद।
मैंने दीक्षा देने का, त्याग कर दिया मात।।6।।

अब तुम मेरे पट्टशिष्य, से दीक्षा करो स्वीकार।
बालयोगिनी आर्यिका, बनो प्रथम हे मात।।7।।

गुरूणां गुरुदेव की, आज्ञा सिर पर धार।
चलीं वीरमति क्षुल्लिका, वीरसागर के पास।।8।।

जयपुर राजस्थान के, निकट है अतिशय क्षेत्र।
उसी निकट में माधोराजपुरा, नगर है एक।।9।।

ईसवी सन् उन्नीस सौ छप्पन, हो गया सार्थ।
वैशाख कृष्ण दुतिया तिथि, दीक्षा ले ली मात।।10।।

नाम ''ज्ञानमती'' पा लिया, गुरुमुख से साकार।
रखो ध्यान तुम नाम का, यह दिया आशीर्वाद।।11।।

उन्हीं ज्ञानमति मात की, मैं शिष्या अज्ञान।
इनने दीक्षा में दिया, चन्दनामती मेरा नाम।।12।।

उन माता का बांसठवां, दीक्षादिवस है आज।
ईसवी सन् है दो हजार, सत्रह दिन गुरुवार।।13।।

पूर्ण किया लिख कर इसे, मन में है उल्लास।
गुरु माँ के कर कमल में, अर्पण है कृति आज।।14।।

महाराष्ट्र यात्रा के मध्य, रचा यह लघु विधान।
मुम्बई के जिनमंदिरों का, मन में आया ध्यान।।15।।

एक साथ सब मंदिरों का, दर्शन हैं नहिं शक्य।
अतः भाव से सब करें, मंदिर दर्शन भव्य।।16।।

इक मंदिर के दर्श से, जब फल मिले क्रोड़ उपवास।
तब क्यों न हम प्राप्त करें, फल असंख्य उपवास।।17।।

हे भव्यात्मन्! तुम करो, ठाट बाट से पाठ।
और अन्त में तुम लहो, प्रभु भक्ति फल सार्थ।।18।।

।।इति मुम्बई जिनमंदिर विधानम् शुभ कल्याणाय भवतु।।

मंगल आरती

मुम्बई के मंदिरों की, चलो मिलके आरती उतारें।
आरती उतारें, प्रभु की प्रतिमा निहारें।।
मुम्बई के.....।।टेक.।।

मंदिर बनाने की प्रथा प्राचीन है,
जिन मूर्तियों की भक्ति भी प्राचीन है।
ऋषि-मुनि-सन्त भी सभी, भक्ति करके मोक्ष सिधारे।।
मुम्बई के.....।।1।।

मंदिर में बाजें घण्टा-झालर,
प्रभु पर ढुरते हैं चौंसठ चामर।
जय-जय की ध्वनि करके, जिनवर की छवि को निहारें।।
मुम्बई के.....।।2।।

भौतिक नगर बम्बई में भी देखो,
जिनवर की आध्यात्मिक छवि देखो।
इनकी पूजा-भक्ति करके, अपने नर जनम को सुधारें।।
मुम्बई के.....।।3।।

मंदिर व मूर्तियों की आरती उतारके,
संसार के सब संकटों को टालके।
''चन्दनामती'' भरे भण्डार, फिर न किसी ओर हम निहारें।।
मुम्बई के.....।।4।।

कलियुग में भी जिनभक्ति में है शक्ति,
दुर्गति में जाने से वही रोक सकती।
इसीलिए घृतदीप ले, बार-बार आरती उतारें।।
मुम्बई के.....।।5।।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

–स्थापना –

पूजन करो जी-

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधीकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।.....

पूजन करो जी,

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

–अष्टक –

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।1।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमती मात्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।
उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।2।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमती मात्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।3।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमती मात्रे अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।4।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमती मात्रे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।5।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमती मात्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।6।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमती मात्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।

धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।7।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमती मात्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।8।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमती मात्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।9।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमती मात्रे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-शेरछंद-

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

–दोहा –

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन –नागिन-मेरा मन डोले.....।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।

शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।।माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।1।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।।माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।2।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने ,ज्ञान की ज्योति जलाई।।माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।3।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।।माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।4।।

तीर्थ अयोध्या, मांगीतुंगी का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।5।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।।माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।6।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।।माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।7।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।8।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।9।।

-दोहा-

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमती मात।।10।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– शंभुछंद –

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें महापूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह, आलोक जगत को मिले सदा।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आरती

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–कभी राम बनके.....

भक्ति भाव लेकर, दीपक थाल लेकर,
गणिनी माता की आरती करें हम।।टेक.।।

तुम ज्ञानमती कहलाईं, तुम बालसती बन आईं,
दीपक हाथ लेकर, सबको साथ लेकर,
गणिनी माता की आरती करें हम।।1।।

इतिहास की तुम निर्मात्री,कई तीर्थों की प्रेरणाप्रदात्री,
नई याद लेकर, भक्ति साथ लेकर,
गणिनी माता की आरती करें हम।।2।।

जम्बूद्वीप बना है धरा पर, जिससे चमक रहा हस्तिनापुर,
वही याद लेकर, भक्ति साथ लेकर,
गणिनी माता की आरती करें हम।।3।।

मांगीतुंगी अयोध्या में जाकर, किया निर्माण नूतन वहाँ पर,
वही याद लेकर, भक्ति साथ लेकर,
गणिनी माता की आरती करें हम।।4।।

पुनः तीरथ प्रयाग बनाया, ऋषभ जिनवर का नाम गुंजाया,
पुण्यधाम लेकर, तेरा नाम लेकर,
गणिनी माता की आरती करें हम।।5।।

वीर जन्मभूमी का यश बढ़ाया, कुण्डलपुर का विकास कराया,
श्रुत का सार लेकर, आधार लेकर,
गणिनी माता की आरती करें हम।।6।।

तुम युग-युग जिओ मेरी माता, ''चंदना'' गाएँ सब तेरी गाथा,
श्रद्धाभाव लेकर, दीपक थाल लेकर,
गणिनी माता की आरती करें हम।।7।।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

नाम– प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम– ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि– 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई– चार (कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद)

बहन– आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

ब्रह्मचर्य व्रत– 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंधदशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन– 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत– सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा– हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि– 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

मर्यादा शिष्योत्तमा की उपाधि– 25वीं रजतजयंती (पूज्य चंदनामती माताजी की) सन् 2014 के अवसर पर जन्मभूमि टिकैतनगर जैन समाज द्वारा।

पीएच.डी. की मानद उपाधि– तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को विश्वविद्यालय में।

साहित्यिक योगदान– चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि 200 से अधिक पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' का हिन्दी पद्यानुवाद, भगवान महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन, बारहभावना आदि), भजन (लगभग 1500), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका। वर्तमान में 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ जैनिज्म डॉट कॉम' (ऑनलाईन जैन विश्वकोश) के सम्पादन में संलग्न।